04

भारत का विदेश संबंध

सीखने के प्रतिफल

इस अध्याय से बच्चें भारत द्वारा अपनाए गए विदेश नीति के बारे में सीखेंगे।

परिचय

इस अध्याय मे हम विदेश नीति के सिद्धांत; अन्य राष्ट्रों के साथ भारत के बदलते संबंध: अमेरिका, रूस, चीन, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि।

भारत के अपने पड़ोसियों के साथ संबंध- पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका और म्यांमार तथा भारत का परमाणु कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानेंगे।

भारत की विदेश नीति

- जब एक देश विभिन्न देशों, अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों, अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों तथा आन्दोलनों व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति जिन नीतियों को अपनाता है,उन नीतियों को सामूहिक रूप से विदेश नीति कहा जाता है
- भारत की विदेश नीति पर देश के पहले प्रधानमंत्री एवं विदेश मंत्री पं जवाहर लाल नेहरू की अमिट छाप है।
- नेहरू जी की विदेश नीति के तीन मुख्य उद्देश्य थे :
  1. संघर्ष से प्राप्त सम्प्रभुता को बचाए रखना ।
  2. क्षेत्रीय अखंडता को बनाए रखना ।
  3. तेज गति से आर्थिक विकास करना ।
- भारत की विदेश नीति के मुख्य सिद्धान्त :-
  1. गुटनिरपेक्षता
  2. निःशस्त्रीकरण
  3. वसुधैव कुटुम्बकम
  4. अंतर्राष्ट्रीय मामलों में स्वतंत्रतापूर्वक एवं सक्रिय भागीदारी

© JCERT not to be republished

5. पंचशील

6. साम्राज्यवाद का विरोध

7. अंतर्राष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण समाधान

गुट निरपेक्षता की नीति

- गुटनिरपेक्षता का अर्थ है कि विभिन्न शक्ति गुटों से तटस्थ या दूर रहते हुए अपनी स्वतन्त्र निर्णय नीति और राष्ट्रीय हित के अनुसार सही या न्याय का साथ देना।

- अपनी संप्रभुता को बचाए रखना और भारत को तीव्र आर्थिक व सामाजिक विकास के लक्ष्य को भी प्राप्त करना था।

- अतः इन दोनों उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भारत ने गुट निरपेक्षता की नीति को अपनी विदेश नीति के एक प्रमुख तत्व के रूप में अंगीकार किया ।

- इसी कड़ी में 1955 में इंडोनेशिया के शहर बांडुंग में एफ्रो — एशियाई सम्मेलन हुआ, जिसमें गुट निरपेक्ष आंदोलन की नींव पड़ी।

- गुट निरपेक्ष आंदोलन का पहला सम्मेलन 1961 के सितंबर में बेलग्रेड में हुआ था इसकी स्थापना में नेहरू की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी।

- इस नीति के द्वारा भारत जहाँ शीत युद्ध के परस्पर विरोधी खेमों तथा उनके द्वारा संचालित सैन्य संगठनों जैसे — नाटो (NATO), वारसा पेक्ट आदि से अपने को दूर रख सका ।

- वहीं आवश्यकता पड़ने पर दोनों ही खेमों से आर्थिक व सामरिक सहायता भी प्राप्त कर सका ।

भारत — चीन संबंध

- नेहरू जी ने चीन से अच्छे संबंध बनाने की पहल की। 1949 में चीनी क्रांति के बाद चीन की कम्यूनिस्ट सरकार को मान्यता देने वाला भारत पहले देशों में एक था ।

- उप — प्रधानमंत्री एवं तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने आशंका जताई थी कि, चीन भारत पर आक्रमण कर सकता है। नेहरू जी का मत इसके विपरित यह था कि इसकी संभावना नहीं है।

- 29 अप्रैल 1954 को भारत के प्रधानमंत्री पं नेहरू तथा चीन के प्रमुख चाऊ एन लाई के बीच पांच बातों पर द्विपक्षीय समझौता हुआ। जिसे पंचशील समझौता कहा जाता है:-

1. एक दूसरे के विरूद्ध आक्रमण न करना।

2. एक दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना ।

3. एक दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता का आदर करना ।

4. समानता और परस्पर मित्रता की भावना ।

5. शांतिपूर्ण सह — अस्तित्व।

© JCERT not to be republished

भारत-चीन के बीच विवाद के मुद्दे:—

तिब्बत की समस्या:-

- 1950 में चीन ने तिब्बत पर अपना नियंत्रण जमा लिया। तिब्बती जनता ने इसका विरोध किया ।
- तिब्बती धार्मिक नेता दलाई लामा ने अपने अनुयायियों सहित भारत से राजनीतिक शरण मांगी और 1959 में भारत ने उन्हें राजनीतिक शरण दे दी ।
- चीन ने भारत के इस कदम को अपने अंदरूनी मामलों में दखलंदाजी माना ।

सीमा — विवाद:-

- चीन और भारत के मध्य विवाद का दूसरा बड़ा कारण सीमा — विवाद था ।
- चीन, जम्मू — कश्मीर के लद्दाख वाले हिस्से के अक्साई — चीन और अरूणाचल प्रदेश के अधिकतर हिस्सों पर अपना अधिकार जताता है।

भारत चीन युद्ध:-

- 1962 में चीन ने भारत पर हमला कर दिया। भारतीय सेना ने इसका कड़ा प्रतिरोध किया। परन्तु चीनी बढ़त रोकने में नाकामयाब रहे ।
- आखिरकार चीन ने एक तरफा युद्ध विराम घोषित कर दिया। और भारत के कुछ हिस्सों पर अपना अधिकार जमा लिया। उस समय से दोनों देशों के सम्बन्ध आज तक सामान्य नही हो पाए है ।

युद्ध के परिणाम:-

- भारत की हार ने। भारतीय विदेश नीति की आलोचना की गई।
- कई बड़े सैन्य कमांडरों ने इस्तीफा दे दिया रक्षा मंत्री वी के कृष्णमेनन ने मंत्रिमडल छोड़ दिया।
- पहली बार सरकार के खिलाफ अविश्वस प्रस्ताव लाया गया।
- भारत में मौजूद कम्युनिस्ट पार्टी का बंटवारा (1964) हो गया।
- चीन से हारकर भारत की खासकर नेहरू जी की छवि को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत नुकसान हुआ ।

1962 के बाद भारत चीन संबंध-

- 1962 के बाद भारत — चीन संबंधों को 1976 में राजनयिक संबंध बहाल कर शुरू किया गया।
- 1979 में श्री अटल बिहारी वाजपेयी (विदेश मंत्री) चीन दौरे पर गए। बाद में नेहरू के बाद राजीव गांधी बतौर प्रधानमंत्री चीन के दौरे पर गए।
- 2003 में भी अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमंत्री के तौर पर चीन की यात्रा की जिसमें प्राचीन सिल्करूट (नाथूला दर्रा) को व्यापार के लिए खोलने पर सहमति हुई जो 1962 से बंद था। इससे यह मान्यता भी मिली कि चीन सिक्किम को भारत का अंग मानता है।

© JCERT not to be republished

भारत — पाकिस्तान संबंध

- भारत विभाजन (1947) द्वारा पाकिस्तान का जन्म हुआ। पाकिस्तान के साथ भारत के संबंध शुरू से ही कड़वे रहे है।
- कश्मीर मुद्दे पर 1947 में ही दोनों देशों की सेनाओं के बीच छाया — युद्ध छिड़ गया। इसी छाया युद्ध में पाकिस्तान ने कश्मीर के एक बड़े भाग पर अनाधिकृत कब्जा जमा लिया।
- 1960 में विश्व बैंक की मध्यस्थता में दोनों के बीच सिंधु नदी जलसंधि की गई।
- इस पर पं नेहरू और जनरल अयूब खाँ ने हस्ताक्षर किए। विवादों के बावजूद इस संधि पर ठीक — ठाक अमल रहा।
- 1965 में पाकिस्तान ने भारत पर हमला कर दिया। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने "जय जवान, जय किसान" का नारा दिया।
- इस समय भारत में अकाल की स्थिति भी थी। हमारी सेना लाहौर के नजदीक तक पहुंच गई थी। संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएनओ) के हस्तक्षेप से युद्ध समाप्त हुआ।
- 1966 में ताशकंद समझौता हुआ जिसमें भारत की ओर से प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल अयूब खाँ ने हस्ताक्षर किए।
- 1971 में पाकिस्तान को चीन तथा अमेरिका से मदद मिली। इस स्थिति में श्रीमति इंदिरा गांधी ने सोवियत संघ के साथ 20 वर्षीय मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किए।

बांग्लादेश युद्ध, 1971

- 1971 में पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ पूर्णव्यापी युद्ध छेड़ दिया।
- भारत विजयी हुआ। पाकिस्तानी सेना ने 90000 सैनिकों के साथ आत्मसमर्पण कर दिया।
- और पूर्वी पाकिस्तान के स्थान पर नये देश बांग्लादेश का उदय हुआ।
- 1972 में शिमला समझौता हुआ इस पर भारत की ओर से प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी और पाकिस्तान की ओर से जुल्फिकार अली भुट्टो ने हस्ताक्षर किए।
- 1971 की जंग के बाद इंदिरा गांधी की लोकप्रियता को चार चांद लग गए। इस युद्ध के बाद अधिकतर राज्यों में विधानसभा के चुनाव हुए और अनेक राज्यों में कांग्रेस पार्टी बड़े बहुमत से जीती।
- भारत को अपनी सैन्य ढांचे का आधुनिकीकरण करने के लिए 1962 में रक्षा उत्पाद विभाग और 1965 में रक्षा आपूर्ति विभाग की स्थापना हुई।
- 1999 में भारत ने पाकिस्तान से संबंध सुधारने की पहल करते हुए दिल्ली — लाहौर बस सेवा शुरू की।

परन्तु पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ कारगिल संघर्ष छेड़ दिया। कारगिल में अपने को मुजाहिद्दीन कहने वालों ने सामरिक महत्व के कई इलाकों जैसे द्रास, माश्कोह, वतालिक आदि पर कब्जा कर लिया। भारतीय सेना ने बहादुरी से अपने इलाके को खाली करा लिए।

© JCERT not to be republished

भारत का परमाणु कार्यक्रम

- मई 1974 में पोखरण में भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण किया फिर मई 1998 में पोखरण में ही भारत ने पाँच परमाणु परीक्षण कर स्वयं को परमाणु सम्पन्न घोषित कर दिया।
- इसके तुरंत बाद पाकिस्तान ने भी परमाणु परीक्षण कर स्वयं को परमाणु शक्ति घोषित कर दिया।
- इन परीक्षणों के कारण क्षेत्र में एक नए प्रकार का शक्ति संतुलन बन गया। दोनों देशों पर अमेरिका सहित कई देशो ने आर्थिक प्रतिबंध लगा दिए।
- भारत ने 1968 की परमाणु अप्रसार संधि एवं 1995 की "व्यापक परीक्षण निषेध संधि (Comprehensive Nuclear Test Ban Treaty) CTBT, पर हस्ताक्षर नहीं किए क्योंकि भारत इन्हें भेदभावपूर्ण मानता है।
- भारत शांतिपूर्ण कार्यों हेतू परमाणु शक्ति का प्रयोग करेगा। भारत अपनी सुरक्षा तथा आवश्यकतानुसार परमाणु हथियारों का निर्माण करेगा। भारत परमाणु हथियारों का प्रयोग पहले नहीं करेगा।
- परमाणु हथियारो को प्रयोग करने की शक्तिसर्वोच्च राजनीतिक सत्ता के हाथ होगी। भारतीय विदेश नीति के बारे में राजनीतिक दल थोड़े बहुत मतभेदों के अलावा राष्ट्रीय अखण्डता, अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा की सुरक्षा तथा राष्ट्रीय हितों के मसलों पर व्यापक सहमति है।
- 1991 में शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद विदेश नीति का निर्माण अमेरिका द्वारा पोषित उदारीकरण व वैश्वीकरण को ध्यान में रखकर किया जाने लगा तथा क्षेत्रीय सहयोग को भी विशेष महत्व दिया गया।

स्मरणीय तथ्य

- संयुक्त राष्ट्र संघ का स्थापना 24 अक्टूबर 1945 में हुआ था।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमेरिकी गुट के बीच शीत युद्ध आरंभ हुआ था।
- नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान इंडियन नेशनल आर्मी (आई एन ए) का गठन किया था।
- सोवियत संघ का विघटन 1991 ई० में हो गया और इसके साथ ही शीत युद्ध भी समाप्त हो गया।
- भारत और चीन के बीच स्थित सीमा रेखा को मैक मोहन रेखा के नाम से जाना जाता है। जो अरुणाचल प्रदेश में स्थित है।

© JCERT not to be republished

अभ्यास प्रश्न
बहुविकल्पीय प्रश्न:-

1. स्वतंत्र भारत के प्रथम विदेश मंत्री कौन थे?

   a. जवाहरलाल नेहरू

   b. सरदार बल्लभ भाई पटेल

   c. डॉ राजेंद्र प्रसाद

   d. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

2. गुटनिरपेक्ष आंदोलन का स्थापना कब हुआ ?

   a. 1955 b. 1961

   c. 1965 d. 1966

3. स्वतंत्र भारत के प्रथम गृह मंत्री कौन थे?

   a. पंडित जवाहरलाल नेहरू

   b. सरदार बल्लभ भाई

   c. पटेल सर्वपल्ली राधाकृष्णन

   d. डॉ राजेंद्र प्रसाद

4. शिमला समझौता कब हुआ था?

   a. 1966 b. 1972

   c. 1975 c. 1979

5. सिंधु जल संधि 1960 में किनके बीच हुआ था?

   a. भारत-चीन

   b. भारत-पाकिस्तान

   c. भारत-बांग्लादेश

   d. भारत-नेपाल

लघु उत्तरीय प्रश्न-

6. गुटनिरपेक्षता का क्या अर्थ होता है?

7. पंडित जवाहरलाल नेहरू के विदेश नीति का क्या उद्देश्य था?

8. पंचशील समझौता क्या था?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

9. भारत-चीन संबंधों का वर्णन करें।

10. पंडित जवाहरलाल नेहरू की विदेश नीति की विवेचना करें।

© JCERT not to be republished